AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारतीय सीमा प्रबंधन में सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) की भूमिका

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रो. गिरीश कांत पांडेय
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

प्रो. प्रवीण कुमार कड़वे
सहा. प्राध्यापक, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

एवं

हितेश कुमार पटेल
शोधार्थी, रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन स्नातकोत्तर विज्ञान महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

किसी भी देश की राष्ट्रीय रक्षा, सम्प्रभुता, एकता एवं अखंडता उसके भौगोलिक सीमाओं से निर्धारित होती है, जिसके अंतर्गत जल, थल, और नभ सीमा क्षेत्र आते हैं। रक्षा मंत्रालय के अधीन, सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास और सुरक्षा की रीढ़ के रूप में कार्य कर रहा है, इसके साथ ही वर्तमान समय में यह संगठन भारत के विशाल और विविध सीमा क्षेत्रों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस शोध पत्र के माध्यम से भारतीय सीमाओं के प्रबंधन एवं विकास में बीआरओ के कार्य, योगदान, उपलब्धियों एवं बहुमुखी भूमिका के बारे में विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

सीमा संरचना, सीमा प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय सीमा, अवसंरचना विकास, रणनीतिक सड़क.

प्रस्तावना

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कुछेक अपवाद को छोड़कर राज्यों के बीच सीमा विवाद एवं सीमा पार चुनौतियां एक महत्वपूर्ण उभयनिष्ठ कारक रहा है। भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ विविधता से भरी हुई हैं, जिसमें पहाड़ों, मैदानों, रेगिस्तानों, दलदलों, नदी के किनारे और जंगल के इलाकों का एक अनूठा परिदृश्य हमें नजर आती है। वर्तमान भारत के अंतर्राष्ट्रीय सीमा का निर्धारण 1947 में बंटवारे की वीभत्स घटना तथा अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात निर्धारित की हुई है। भौगोलिक रूप से भारत दक्षिण एशिया के सभी देशों (अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान एवं श्रीलंका) के साथ–साथ चीन, इंडोनेशिया, म्यांमार तथा थाईलैंड से अपनी सीमायें साझा करता है। भारत की सम्पूर्ण सीमा रेखा लगभग 22629 किलोमीटर की है, जिसमें 15106.7 कि.मी. भू–सीमा तथा 7516.6 कि.मी. की तटीय सीमा रेखा है।

देश का नाम	सीमा की लंबाई (किलोमीटर में)
बांग्लादेश	4,096.7
चीन	3,488.0
पाकिस्तान	3,323.0
नेपाल	1,751.0
म्यांमार	1,643.0
भूटान	699.0
अफगानिस्तान	106.0
कुल	15,106.7

(Source: Department of Border Management, MHA)

किसी भी देश के लिए इतनी बड़ी सीमा को सुरक्षित रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। भारत का कोई भी क्षेत्र आज बाह्य विध्वंसक से दूर नही है ऐसे में परिस्थितियों के मद्देनजर भारतीय सीमाओं के बेहतर प्रबंधन एवं अवसंरचनात्मक विकास में बीआरओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। वर्ष 1999 में कारगिल संघर्ष एवं इसके बाद कारगिल समीक्षा समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के मद्देनजर सीमा प्रबंधन की अवधारणा को भारत सरकार द्वारा अति महत्वपूर्ण माना गया। भारतीय सीमाओं के बेहतर प्रबंधन और साथ ही आत्मनिर्भर एवं सशक्त भारत के निर्माण में यह संगठन सीमा क्षेत्रों में सड़क कनेक्टिविटी प्रदान करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) के बारे में

सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में रणनीतिक सड़क निर्माण के लिए एक कार्यकारी बल है जिसकी परिकल्पना एवं स्थापना 7 मई 1960 को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के द्वारा देश के उत्तर और उत्तर–पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों में सेना की सामरिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शांति और युद्धकाल दोनों की जरूरतों के लिए रणनीतिक सड़क निर्माण और रखरखाव कार्य के लिए किया था।

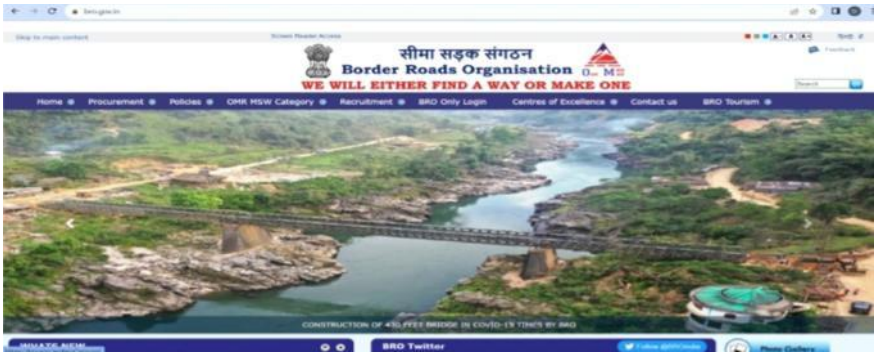

(Source: BRO, official Website)

बीआरओ की प्राथमिक भूमिका भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क संपर्क प्रदान करना है। यह भारत के समग्र सामरिक और रणनीतिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सीमाओं के साथ–साथ बुनियादी ढांचे का निर्माण भी करता है। बीआरओ, वर्ष 2015 से रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य कर रहा है, इससे पहले यह सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के अधीन था। भारतीय सेना के कोर ऑफ इंजीनियर्स, सेना सेवा कोर, सैन्य पुलिस और अन्य संगठनों के अधिकारी और कर्मी संयुक्त रूप से इस संगठन का निर्माण करते हैं। बीआरओ का कार्य क्षेत्र बहुत ही व्यापक हैं जिसमें भारत के 19 राज्यों एवं तीन केंद्र शासित प्रदेशों, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह सहित भूटान, म्यांमार, अफगानिस्तान एवं तजाकिस्तान जैसे मैत्रीपूर्ण देशों में सड़कों का निर्माण कार्य शामिल है जो इस क्षेत्र में हमारे सामरिक उद्देश्यों में योगदान दे रहे हैं। सीमा सड़क संगठन एक अकेली रणनीतिक सड़क निर्माण वाली संस्था

है जो विपरीत और कठिन परिस्थितियों तथा अत्यंत खराब मौसम में भी सड़क का निर्माण और मरम्मत कार्य करती है। इसके साथ ही यह संगठन आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में भी कार्य कर रही है, इसने वर्ष 2004 में तमिलनाडु में सुनामी, 2005 में कश्मीर भूकंप, 2010 में लद्दाख में बाढ़ आदि के पश्चात् होने वाले पुनर्निर्माण कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संगठनात्मक संरचना

सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) में रक्षा मंत्रालय के तहत सीमा सड़क विंग और जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स (जीआरईएफ) शामिल हैं। अधिकारियों का चयन यूपीएससी द्वारा आयोजित आईईएस (IES) परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। अधिकारियों को भारतीय सेना कोर ऑफ इंजीनियर्स से भी प्रतिनियुक्त किया जाता है। जीआरईएफ भारत के संविधान के अनुच्छेद 33 के तहत सशस्त्र बलों का एक अभिन्न अंग है और जीआरईएफ के सदस्य भी सशस्त्र बलों के सदस्य हैं, जैसा कि आर. विस्वान बनाम भारत संघ 1983 के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा घोषित किया गया हैं।

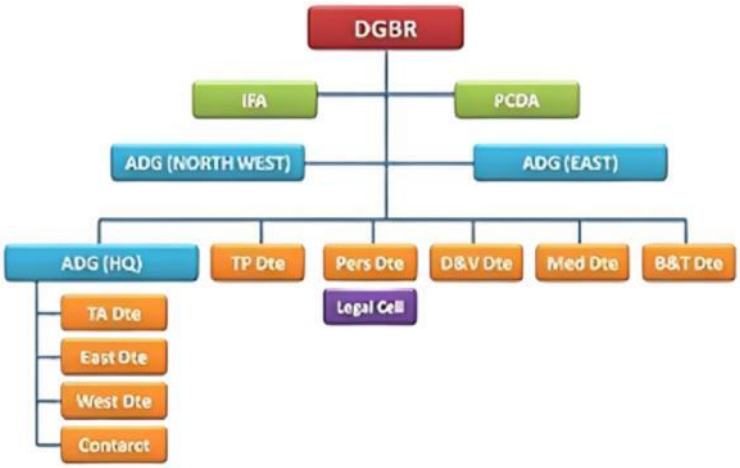

(Source: Organçational Structure, Border Road Organçation)

बीआरओ में 18 परियोजनाएं शामिल हैं, जिन्हें टास्क फोर्स, सड़क निर्माण कंपनियों (आरसीसी), पुल निर्माण कंपनियों (बीसीसी), नाली रखरखाव कंपनियों (डीएमसी) और प्लाटून में विभाजित किया गया है। संगठन में बेस वर्कशॉप, स्टोर डिवीजन, प्रशिक्षण और भर्ती केंद्र और अन्य कर्मचारी भी शामिल हैं। एक आंतरिक वित्तीय सलाहकार (आईएफए) मुख्य लेखा अधिकारी और आंतरिक लेखा परीक्षक की भूमिका निभाते हुए बीआरओ का समर्थन करता है। यह प्रणाली दक्षता लाने और संसाधन उपयोग में सुधार करने के लिए 23 मार्च 1995 को शुरू की गई थी। संगठन स्थानीय स्तर पर मजदूरों को रोजगार देता है। बीआरओ में लगातार 179 दिनों से अधिक समय तक किसी भी स्थानीय मजदूर को तैनात नहीं किया जाता है।

सीमा सड़क संगठन की प्रमुख उपलब्धियां

सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने पिछले छह दशकों से अधिक समय में भारत की सीमाओं के साथ–साथ भूटान, म्याँमार, अफगानिस्तान तथा ताजाकिस्तान सहित मित्र देशों में चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में लगभग 61,000 किलोमीटर से अधिक सड़कों, 900 से अधिक पुलों, चार सुरंगों एवं 19 हवाई क्षेत्रों का निर्माण किया है।

देश का नाम	कार्य
अफगानिस्तान	215 किमी. डेलाराम–जाराज सड़क निर्माण
भूटान	प्रोजेक्ट दंतक के तहत बुनियादी ढांचे का निर्माण
म्यांमार	160 किमी. तामू–कालेम्यो–कालेवा सड़क निर्माण
तजाकिस्तान	फरखोर और अयनी रनवे का पुनरुद्धार

(Source - About, Border Road Organzation)

बीआरओ अपने विदेशी रणनीतिक परियोजनाओं में प्रोजेक्ट दंतक के तहत वर्ष 1961 से भूटान में बुनियादी ढांचो के निर्माण कर रहा है इसके साथ ही 17 जुलाई, 2008 को अफगानिस्तान में डेलाराम–जाराज में 215 किमी. लंबी सड़क का निर्माण किया। संयोगवश यह अफगानिस्तान के निमरोज प्रांत की पहली पक्की सड़क है। संगठन ने तजाकिस्तान में 50 करोड़ रुपए की लागत से 10 महीने के रिकार्ड समय में ही फरखोर और अयनी रनवे के पुनरुद्धार का काम किया। म्यांमार में 160 किमी. लंबी तामू–कालेम्यो–कालेवा सड़क का निर्माण और रखरखाव किया। बीआरओ की सबसे बड़ी अवसंरचनात्मक उपलब्धियों में से एक हिमाचल प्रदेश में निर्मित सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग और इसका नाम अटल सुरंग है। रोहतांग दर्रे के नीचे अटल सुरंग 8.8 किलोमीटर लंबी सुरंग है। इससे मनाली और लेह के बीच की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है। बीआरओ ने नवंबर 2021 में उमलिंग ला दर्रे में उच्चतम ऊंचाई वाली सड़क के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। बीआरओ के द्वारा वर्ष 2022–23 में 103 बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को पूरा किया गया, जो एक वर्ष में किये गए सबसे अधिक कार्य हैं। इनमें पूर्वी लद्दाख में श्योक ब्रिज का निर्माण और अरुणाचल प्रदेश में अलॉन्ग–यिंकिओनग रोड पर लोड क्लास 70 का स्टील आर्क सियोम ब्रिज शामिल है।

पूंजी बजट में बढ़ोतरी

भारत सरकार के द्वारा वित्तीय वर्ष 2023–24 में सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) का पूंजी बजट 43 प्रतिशत बढ़ाकर 5,000 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जबकि वित्त वर्ष 2022–23 में यह 3,500 करोड़ रुपये था। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, वित्त वर्ष 2021–22 के बाद से बीआरओ का पूंजीगत बजट दो वर्षों में दोगुना हो गया है। इससे सीमा अवसंरचना को बढ़ावा मिलेगा, जिससे सेला सुरंग, नेचिपु सुरंग और सेला–छबरेला सुरंग जैसी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण परिसंपत्तियों का निर्माण होगा और सीमा–संपर्क भी बढ़ेगा।

भारत और मित्र देशों में बीआरओ परियोजनाएं

बीआरओ अब तक कुल 18 परियोजनाएं भारत तथा उसके मित्र देशों में संचालित कर चुका है। इन परियोजनाओं में शत्रुतापूर्ण वातावरण एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के बावजुद रणनीतिक सड़कें, पुल और हवाई क्षेत्र विकसित करना शामिल है।

क्रं	परियोजना	राज्य मित्र–देश	अन्य जानकारी
1	अरुणांक	अरुणाचल प्रदेश और असम	• यह परियोजना अरुणाचल प्रदेश और असम में लगभग 1113 किमी सड़कों के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है। • अरुणांक परियोजना का नाम अरुणाचल प्रदेश के नाम पर रखा गया है।
2	बीकन	जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश	• बीआरओ की सबसे पुरानी परियोजना है जो शुरुआत में पूरे जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश की देखभाल करती है। • इसे मई 1960 के पहले सप्ताह में स्थापित किया गया था।
3	ब्रह्मांक	अरुणाचल प्रदेश	• यह अरुणाचल प्रदेश में चल रही बीआरओ की चार अन्य परियोजनाओं (वर्तक, अरुणांक और उदयक) में से एक है। • सिसेरी नदी पुल का निर्माण हाल ही में अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मांक परियोजना द्वारा किया गया था।
4	चेतक	पंजाब	• बीआरओ ने पंजाब में कासोवाल परिक्षेत्रों को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने के लिए रावी नदी पर एक नया स्थायी पुल बनाया और खोला है। • 484 मीटर पुल का निर्माण चेतक परियोजना के 49 सीमा सड़क टास्क फोर्स द्वारा बनाए गए 141 ड्रेन द्वारा किया गया था।
5	दीपक	पंजाब, हरियाणा और उत्तराखंड	• यह परियोजना पंजाब, हरियाणा और उत्तराखंड में कुछ सड़कों और रणनीतिक चैनलों के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है। • दीपक परियोजना मई 1962 में अस्तित्व में आई।
6	दंतक	भूटान (मित्र देश) सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम और मेघालय	• यह परियोजना भूटान, सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम और मेघालय में सड़क बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है।

7	हिमांक	केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख	• यह परियोजना दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र और सबसे ऊंचे हवाई क्षेत्र से सबसे ऊंची झील तक सबसे ऊंची मोटर योग्य स्तर की सड़क के माध्यम से संचार लाइन बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है।
8	हीरक	आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़	• यह परियोजना आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ में महत्वपूर्ण सड़क बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के प्रबंधन और विकास के लिए जिम्मेदार है।
9	पुष्पक	मिजोरम, असम, मणिपुर और त्रिपुरा	• यह परियोजना मिजोरम, असम, मणिपुर और त्रिपुरा राज्यों में लगभग 2113 किलोमीटर सड़कों के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है।
10	संपर्क		• यह परियोजना उत्तर में पीर पंजाल रेंज से लेकर दक्षिण में पठानकोट तक और पश्चिम में पुंछ से लेकर पूर्व में डलहौजी तक लगभग 2200 किलोमीटर सड़क नेटवर्क को कवर करती है।
11	सेतुक	त्रिपुरा, असम और मेघालय	• यह परियोजना त्रिपुरा, असम के चाचर लेवी और मेघालय की जैनतिया पहाड़ियों में सड़क बुनियादी ढांचे के रखरखाव और विकास के लिए जिम्मेदार है।
12	सेवक	नागालैंड और मणिपुर	• यह परियोजना नागालैंड और मणिपुर में सड़क बुनियादी ढांचे के रखरखाव और विकास के लिए जिम्मेदार है। • महत्वपूर्ण सड़क परियोजनाओं में से एक 137 किमी लंबी सड़क जुन्हेबोटा–अघुनातो–किफिरे का निर्माण करके किफिरे शहर को जुन्हेबोटा से जोड़ना था।
13	शिवालिक	उत्तराखंड	• यह उत्तराखंड में तीर्थयात्रा पथ के साथ 650 किमी राष्ट्रीय राजमार्ग सहित 1000 किमी से अधिक सड़कों के रखरखाव करता है।
14	स्वास्तिक	सिक्किम	• यह परियोजना पूर्वी और उत्तरी सिक्किम में अंतर्राष्ट्रीय सीमा और क्षेत्र के कई पर्यटन स्थलों तक जाने वाले सड़क नेटवर्क का निर्माण और रखरखाव करती है।
15	उदयक	अरुणाचल प्रदेश, असम और नागालैंड	• यह परियोजना अरुणाचल प्रदेश, असम और नागालैंड में लगभग 1981 किमी सड़कों के निर्माण और रखरखाव में लगी हुई है।
16	वर्तक	अरुणाचल प्रदेश	• यह अरुणाचल प्रदेश में चल रही बीआरओ की चार परियोजनाओं (अन्य तीन ब्रह्मांक, अरुणांक और उदयक) में से एक है। • सेला टनल हाल ही में इस परियोजना के तहत बनाई गई है।
17	विजयक	केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख	• यह परियोजना हिमांक परियोजना के साथ–साथ लद्दाख क्षेत्र में महत्वपूर्ण सड़क बुनियादी ढांचे के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है।
18	योजक	हिमाचल प्रदेश	• मनाली–लद्दाख में सड़क निर्माण के साथ–साथ सुरंगों का निर्माण और अटल सुरंग जैसी मौजूदा सुरंगों का रखरखाव करना।

(स्त्रोतः बी आर ओ वेबसाइट)

सीमा सड़क संगठन का महत्व

सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) हाल के वर्षों में विकासात्मक और सुरक्षा परिदृश्य को मजबूतीकरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बीआरओ के द्वारा नव स्थापित सड़क नेटवर्क राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने, देश के विभिन्न हिस्सों को एकजुट करने और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बीआरओ द्वारा बनाई गई सड़कें राष्ट्रीय सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सीमा चौकियों और सैन्य प्रतिष्ठानों तक हर मौसम में पहुंच प्रदान करके, संगठन रक्षा तैयारी को मजबूत करते हुए सैनिकों और उपकरणों की तेज और कुशल आवाजाही सुनिश्चित करता है। सड़कें आपदा प्रतिक्रिया और राहत कार्यों के दौरान आवश्यक जीवन रेखा के रूप में भी काम करती हैं, जिससे प्रभावित क्षेत्रों में समय पर सहायता पहुंचाई जा सकती है। बीआरओ की परियोजनाएं सुरक्षा चिंताओं से परे सामाजिक–आर्थिक विकास तक फैली हुई हैं। बाजारों, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार करके, ये सड़कें स्थानीय समुदायों, विशेषकर दूरदराज के

इलाकों में रहने वाले लोगों के जीवन में सुधार लाती हैं। कुल मिलाकर बीआरओ आत्मनिर्भरता एवं सशक्त भारत के निर्माण में संतुलित क्षेत्रीय विकास और समग्र राष्ट्रीय प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष

अपने पूरे इतिहास में, सीमा सड़क संगठन ने राष्ट्र निर्माण, दूर–दराज के क्षेत्रों को जोड़ने और रणनीतिक स्थानों पर रक्षा बलों के लिए सुगम गतिशीलता सुनिश्चित करके राष्ट्रीय सुरक्षा बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्र–निर्माण के प्रति संगठन का समर्पण, सुरक्षा और विकास दोनों में इसके योगदान से स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। निःसंदेह ही संगठन की विशेषज्ञता और चुनौतीपूर्ण वातावरण में काम करने की क्षमता ने इसे भारत के विकास और सुरक्षा पहल का एक अभिन्न अंग बना दिया है जो कि युद्ध एवं शांतिकाल दोनों ही परिस्थितियों में सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत निर्माण के सपने को साकार कर रहा हैं।

संदर्भ सूची

1. FICCI & PWC, "Smart Border Management: Indian perspective, 2016," https://www.pwc.in/, Accessed on : October 15, 2023.
2. Ministry of Defence, Annual Report, Government of India, New Delhi.
3. Ministry of Road Transport and Highways, Annual Report 2012-13 https://morth.nic.in/sites/default/files/other_files/Hindi%20Part%202-7281512183.pdf
4. Panikkar, K. M.; "Problems of Indian Defence" (London: Asia Publishing House, 1960).
5. PIB Year End Review, Ministry of Defence, 2022
6. सीमा सड़क संगठन के बारे में, सीमा सड़क संगठन की वेबसाईट, https://bro.gov.in/index2.asp?slid=151&sublinkid=195&lang=2
7. गुप्ता, अरविंद, *"सीमा प्रबंधनः चुनौतियां और अवसर",* विवेकानंद इंटरनेशनल फाऊंडेशन, 2021.

——==00==——